आज विश्व के पाँचों महाद्वीप में सफेद वस्त्रधारी दिखाई पड़ते हैं। आठ दशक के पूर्व ऐसे वस्त्रधारी इस दुनिया में देखने में नहीं आये। लेकिन अब खासतौर पर भारत के हर शहर, गांव, कस्बे, जहाँ-तहाँ सफेद पोशाकधारी देखने में आते हैं, वे जैसे कि शांतिदूत की तरह इस जग में विचरण कर रहे हों! आपने देखा होगा कि वे नकारात्मक प्रवृत्तियों से मुक्त, अश्लील आचरण से परे और एक सकारात्मक ऊर्जा के साथ, मधुर व्यवहार को लिये हुए होते हैं। क्या कभी आपको यह ख्याल आया कि ये सफेद वस्त्रधारी कौन हैं? कभी सोचा आपने? नहीं ना! अच्छा, उन्हें जानते भी होंगे, तब भी पूर्णतः नहीं, वे कौन हैं, किससे ताल्लुक रखते हैं, उनके पूर्वज कौन हैं, इतनी गहराई तक तो आप गये ही नहीं होंगे ना! तो चलिए आज हम इनके बारे में जानें और समझें।

शास्त्रों में कही बात हो रही है अब प्रत्यक्ष

कौन हैं ये ब्रह्माकुमारियाँ ...!!

कैसे इनका जन्म हुआ

आज अगर विश्व के परिदृश्य पर नज़र डालें तो चारों तरफ अशांति और नकारात्मकता का माहौल है, ऐसा कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं है। ऐसे माहौल के मध्य ये सफेद वस्त्रधारी जैसे कि शांति दूत की तरह नज़र आते हैं, ऐसा उनके होने से वायब्रेशन्स आते हैं। बात करीब आठ दशक पूर्व की है, भारत जब अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के लिए जूझ रहा था, ऐसे में एक दिव्य, अलौकिक शक्ति का इस धरा पर आगमन हुआ और उसने अपने अवतरण के लिए एक वृद्ध मानवीय तन का आधार लिया, जिनका नाम दादा लेखराज था। और उनके मुखारविंद से ये आवाज़ आई 'निजानंद रूपं शिवोहम शिवोहम... ज्ञान स्वरूपं शिवोहम शिवोहम... प्रकाश स्वरूपं शिवोहम शिवोहम...' थोड़े वक्त तक ऐसा चलता रहा। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आ रहा था कि ये हो क्या रहा है! फिर थोड़े दिनों के बाद उन्हें स्वर्णिम दुनिया का साक्षात्कार हुआ और एक आवाज़ आई कि आपको ऐसी दुनिया बनानी है। फिर दूसरी बार उन्हें वर्तमान दुनिया के महापरिवर्तन का साक्षात्कार हुआ। उसके बाद दादा लेखराज को ये बात पूर्णतः समझ में आई कि जगत नियंता इस सृष्टि को परिवर्तन करके भारत के आदि सनातन दैवी संस्कृति की पुनः स्थापना कराना चाहते हैं। जब उन्हें ये सम्पूर्ण निश्चय हुआ तो वे इस कार्य को सम्पन्न करने में जुट गये।

ओम मंडली से...प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय

निश्चय होने के पश्चात् स्वयं परमात्म शक्ति ने दादा लेखराज को नाम दिया, 'प्रजापिता ब्रह्मा'। प्रजापिता ब्रह्मा ने ईश्वरीय आदेशानुसार, जो इस विचार को समझ सके, उस समूह के द्वारा सत्संग आरंभ किया जिसे 'ओम् मंडली' के रूप में जाना जाने लगा, बाद में इसका नाम बदलकर 'प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय' हो गया। आज हम देखते हैं तो प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय सिर्फ भारत में ही नहीं, अपितु सारे विश्व में फैला हुआ है। इस थोड़े समय अंतराल में इतना व्यापक रूप आज हमें इस संस्थान का देखने को मिल रहा है।

जो करे परमात्म शिक्षा का अनुकरण वही है ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी

परमात्मा की शिक्षा को प्रजापिता ब्रह्मा के मुखारविंद से जो सुनते हैं, अनुकरण करते हैं, धारण करते हैं, उन्हें ही ब्रह्माकुमारी या ब्रह्माकुमार कहते हैं। वे कोई गर्भ से जन्म नहीं लेते, किंतु ब्रह्मा के मुख कमल से जन्म लेकर 'ब्रह्मा-मुख वंशावली' कहलाते हैं। इन ब्रह्मा-मुख वंशावलियों का मुख्य उद्देश्य है परमात्मा के निर्देश को धारण करना और उनके संदेश को सारे विश्व में पहुंचाना। निरंतर परम कृपालु परमात्मा के निर्देशों को अपने जीवन में उतारना और अपने दिव्य व्यवहार के द्वारा जग में शांति, सौहार्द, समरसता और भाईचारे के वायब्रेशन्स को फैलाना। जिसको हम दूसरे शब्दों में कहें तो हमारे आदि सनातन देवी-देवता धर्म की संस्कृति की स्थापना करना है। इस तरह से भारत में पुनः दैवी साम्राज्य आयेगा।

ब्रह्मा की शिक्षा की प्रत्यक्षता ब्रह्मा वत्सों द्वारा

प्रजापिता ब्रह्मा एक नये युग के युग पुरुष के रूप में उभरते नज़र आते हैं। उनकी शिक्षाओं से सभी ब्रह्मा वत्सों में वो देवत्व दिखाई देता है जिसकी आज हम कल्पना मात्र करते हैं। हमने केवल सुना है कि भारत सोने की चिड़िया था, परंतु वो कब था, कैसे उसका आगमन हुआ, कैसे स्थापना हुई, इसे हम पूर्णतः नहीं समझ पाते।

शास्त्रों में कही गई बात हो रही है अब प्रत्यक्ष

ये भारत सोने की चिड़िया कब था, इस विषय पर यदि इतिहास के संदर्भ को देखें, यदि हमने शास्त्रों को पढ़ा है, तो एक बात सदा ही हमारे कानों में गूंजती है, "यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत, अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। परित्राणाय साधुनाम, विनाशाय च दुष्कृताम्, धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामी युगे युगे...।।" तो आज हम देखते हैं, चारों ओर अधर्म, अज्ञान अंधकार के वश मनुष्य विकृत कर्म में रमा हुआ है। चारों तरफ एक दूसरे को नीचा दिखाना, अपमान करना, अनादर करना, ये हम सब आज देख रहे हैं। तो क्या आपको यह नहीं लगता कि इस जंजाल से मुक्त करने के लिए परमात्मा के आने का यही सही समय है? और क्या यह समय हम पतित मनुष्यों को पावन बनाने का नहीं होना चाहिए? अगर शांत मन से सोचेंगे तो इस निष्कर्ष तक पहुंचेंगे कि हाँ, अब बहुत हो चुका, अब हमें शांति की दुनिया में ले चलो प्रभु, बहुत हुआ। क्या आपके मन में ये प्रश्न नहीं उठेगा? उठेगा ना! चारों तरफ अनाचार, दुराचार, परिवार में कटुता, भाई-बहन, पिता-पुत्र के मध्य खुलेआम धर्म का उल्लंघन दिखाई देता है ना! मनुष्य का जीवन जैसे कि नर्क समान बन कर ही रह गया है।

परमात्मा ने निभाया वायदा

ऐसे में हम आपको बताना चाहते हैं कि परमात्मा अपने द्वारा किये हुए वायदे अनुसार इसी समय पर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर परमात्मा फिर से देवत्व को पुनर्स्थापित करने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विश्व के कोने-कोने में यह संदेश और मनुष्य को श्रेष्ठ कर्म करने का निर्देश दे रहे हैं। जिसके द्वारा ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म की पनुर्स्थापना और सर्व धर्म का महापरिवर्तन निकट भविष्य में होगा। और भारत फिर से विश्व गुरू बनेगा। भारत के आदि सनातन संस्कृति का परचम सारे विश्व में लहरायेगा। हम सब एक के हैं, इसलिए एक धर्म, एक मत और एक साम्राज्य सारे सृष्टि पर लायेंगे और कलह-क्लेश का सदा-सदा के लिए इस धरती से खात्मा हो जायेगा। और वसुधैव कुटुम्बकम की परिकल्पना इस सृष्टि पर साकार होगी।